

DPN 66.19

स्तोत्र संग्रह / STOTRA SANGRAHA

Title :

Run. No. 7344

Cat. No.

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19 X 7

Folios 19 Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor भवानिशंकर / हरिहरानन्दवैद्य

Date: NS / SS / VS / KS 789

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / one side yellow

Beginning, colophon, post-colophon : ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय । विरचितं श्रीवि... जं प्रग-
१. इति वासुदेवक समाप्तं ॥ २. इति शंकराचार्य विरचितं श्रीवि... जं प्रग-
अथात समाप्तं ॥ ३. इति शिवानन्दपुराणे सप्तसत्या महादेव्या कवचं समाप्तं ॥

colophon: —

४. इति साजदा स्तव समाप्तः ॥ ५. केशव द्वादशनाम (स्तोत्र) समाप्तः ॥
६. इति स्कन्दपुराण तुरही स्तव समाप्तः ॥ ७. इति चर्मशास्त्रिस्तोत्र समाप्तः ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ किन्तु नाममसहस्रानि विष्णुनामनरुपाणिद
 मचविद्या गनयापयमूयगनायधर्मरुविविद्यागुद्विनिर्गकर ॥ १५ ॥
 विष्णुनामनरुपाणिदमचविद्यागुद्विनिर्गकर ॥ १५ ॥
 वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ सत्यमेव जयते ॥ वासुदेवाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कादौ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ सत्यमेव जयते ॥ वासुदेवाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 निदादधुनामानि विष्णुनामनरुपाणिदमचविद्यागुद्विनिर्गकर ॥ १५ ॥

कशपद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ किन्तु नाममसहस्रानि विष्णुनामनरुपाणिद
 मचविद्या गनयापयमूयगनायधर्मरुविविद्यागुद्विनिर्गकर ॥ १५ ॥
 विष्णुनामनरुपाणिदमचविद्यागुद्विनिर्गकर ॥ १५ ॥
 वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ सत्यमेव जयते ॥ वासुदेवाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कादौ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ सत्यमेव जयते ॥ वासुदेवाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 निदादधुनामानि विष्णुनामनरुपाणिदमचविद्यागुद्विनिर्गकर ॥ १५ ॥

यह ॥ १ ॥ गीथजायादिगमने ॥ किनस्य वि सिमावयू ॥ यत्रयन्ति हलमरिं ॥ उव
ठिदल कामले ॥ ५ ॥ समञ्जलिदलेयुके ॥ क वहा वायदम पुन ॥ कर्वलुयजनयच
गया नित्यलमांगनि ॥ १ ॥ स्नानदान गथा ध्याय साधन के सवाचन ॥ उव ठि कार्कना
ले स्मिन्नयुर्थं सादधिकं रुल ॥ ६ ॥ उव ठि मगरुवत्युर्थं यडावविष्कवल्लरु ॥ क
वायवि द्विदित्वा सा रिगस्य हसुके ॥ ७ ॥ हदं इ समं वनिर्त्य यडाया मिजथ
हलि ॥ गथा कल्यविगाङ्ग कलीमलविनाशनी ॥ १० ॥ मनुनाभनय ॥ कुर्यात्

गृहि त्वा उव ठि दन ॥ पुनर्न वासुदवाय लक्ष्मी काटि गुर्नल रुग ॥ ११ ॥ यगलाज
हयनिर्त्य प्रियं यीयं नलीष्टु रु ॥ मनय सिद्धि ग भवो या तालयन्न ग ॥ १२ ॥ सुव
कि सर्वदवेच किन्नलाष्टु वसगमे ॥ कक्षा (इ) सुदसम्पु गा समूदमथ (न) यला ध
॥ १३ ॥ लम्पु माङ्गि उव ठि वृष्ट गा विष्क ल ॥ वयं न गव कन स्य च वृद्धुर्थं कनस्य ॥
निधनायच ॥ १४ ॥ नायिना (म) मनिनि ॥ सुयं कृष्ण लया नी गा ॥ उगादि रवाग
उव ठि गवयि नितनिदगवा ॥ १५ ॥ वसिष्ठ वचना त्वूर्व लामिन सल यम ॥ १६ ॥

दशयीव तव्वदाधयत्रायिनाउनशीवना ॥ १७ ॥ त्रियागनामदवृद्धा अय
 निजनकामजा नमश्चकवनिकामधायिनायुसुसंगीना ॥ १८ ॥ शङ्कना
 थममादवि यलविचदिमालयत् ननायिनासननैरुवेंकुआ उल्लशीयुक्षमाम्यद
 ॥ १९ ॥ ययाहवणिनानिर्यं कालनमाधवस्यच ननायिनाल्लंशीयादव्या गंग
 जलसमीयगमा ॥ २० ॥ अष्टकै लुसमीयसु सावित्र्यालायनाकृता नयसुत्रयन
 मम्यार्थं उल्लशी ल्वानमाम्यद ॥ २० ॥ सर्वारिद्वयविरि ४ किन्नरीरिष्वना

यिना नम्यप्रमुमङ्गलार्थय स्यवीना ल्वानमासुन ॥ २१ ॥ धर्मो नस्यगयवेना
 लायिनायिनिरी ४ सूर्य सविनाउनशीयूष्मा नलामिनादिनमिचन ॥ २२ ॥ लायिना
 नामदवन सिञ्जीनालक्ष्मनच नसिगयायात्रिना रुक्मा उरुनशीदधुकामन ॥ २३ ॥
 विलाथं यायिनिगंगा यथाक्षमाषगियन ननथेवपुरेशीनाके दृष्टानसवनाच
 ॥ २४ ॥ नम्याशीकिक्लिभ्यायां श्रुक्रयिनाजनस्यविना उरुनशीवानीनाक्षार्थगा
 नासंझंमहगव ॥ २५ ॥ यनमउरुनशीदेवि सागनाकुमनेकृन नलामिका ययदृष्ट

रुद्र रुद्रमान् यूनरागत ॥ २७ ॥ रुद्रणी गरुतं दृष्ट्वा विमृशायानियान्तक ॥ सत्वे दा
मृनिःशङ्कल खड्ग रुद्रादि ७४ धन ॥ २८ ॥ रुद्रणी युगं गदि नं चकार्यं शिवसावदृश
गं गं यथामवायानि दस धनं रुद्रं लीयत ॥ २९ ॥ यणी दममदवसि यमिदं रुद्रं लीयत
नद्विलादमथना रुद्रं रुद्रणी स्त्री स्नाना मरु ॥ ३० ॥ द्वादश्यां जाग्रदधी यतिस्वा रुद्र
णी सुव ॥ द्वाविंशदयना धनु क्रमगतस्य कंठाव ॥ ३१ ॥ अथार्यं जेवन बाल कीमाल वा
ई कं कृणा ॥ न स च मितर्यया नि रुद्रणी यथना तु ॥ ३२ ॥ यीनिमायानि दवस रुद्र

कालादयानि च ॥ कृन्तुगं हाण नाशं स्वर्यं विद्याय यच्छुनि ॥ ३३ ॥ रुद्रणी नामसा
णन रुद्रणी रुद्रनिर्देय हा ॥ स रुद्रानां रुद्रदवाणि मूर्किय च्छुनि दहिनी ॥ ३४ ॥ रुद्रणी
रुद्रसंष्टं रुद्रं ७४ सर्वमिच्छं ददानि च ॥ मद्यन रुद्र लयायार्थं विष्णुना किं दियन रुद्रा
॥ ३५ ॥ गृह्यस्मीन्मुनिनिर्देयं लिखितं वा यिग रुद्रं ॥ नाशु रं विदयनस्य मङ्गलं
मृदुयङ्ग रुद्र ॥ ३६ ॥ रुद्रं रुद्रमङ्गलं गस्य नास्ति किं रुद्रमङ्गलं ॥ निश्चयं कंठावरुकि
निर्विधाग स्य वेष्टुर्वी ॥ ३७ ॥ जाय या विविनि मूर्क धर्म रुद्रं नंगमनी ॥ रुद्रणी रु

वन्तु यी ० गं रू लं रुव निमान व ॥ ३५ ॥ नि धं का ठि स रु स्मानी य रू रू लं सम वा प्रा नि ध
 य धि त्वा रु व शी सु व ॥ ३६ ॥ ॐ ठि स्तु न्य पु ना ध्वं ॐ रु व गी सु व समायं ॥ ॐ ॥ ॐ रु रु रु
 रुं न सा ॥ नि वा व ॥ भ नू यी क सु खा सि नी व भ्रा य च्छु नि क शर्वं क न ध म्म सम च्छा ली क
 म्म ना जा य गे क र्थं ॥ रा वा रा व क र्थं क न क म्म ना या य य ध्व कं ॥ व भ्रा उ वा च ॥ रु भ्रा
 र्थं भ्र ग र्थं र्थं सै सा ल स्य उ सा व ग न न ज म्म र्दं स म्मा रि नि व्वा ॥ ॐ य ल म्म भ्र व ॥ ॐ
 व भ्र क न व या द वो ॥ ॐ रु मि च्छा मि ग रू ल श या व्वे नी स रि ना नू ड श ग ॥ ॐ स य नि व

नि ग ४ य म्म कि न्न व ग न्ध व ॥ ज य य भ्रा य ला ग लो ॥ सि धि वि द्या ध व ॥ ॐ व स लु व य
 लि सा र ग न य य रू य न व रू ला य म्म का य मा न स ॥ व भ्र ल्म क शं व ने व य ॥ ॐ व म्म
 क धा र्थ व ॥ ॐ ॐ रु न ड वा च ॥ ॐ व भ्र न वि भ्र ॐ ॐ रु द वी रु वा न न ॥ सै सा व म्म
 चि जा नी ध न्या नि य ल मा सु र्थं ॥ स र्था ड च्छु ग ध म्म द या दान य य ड ग ॥ ॐ सा रा रु
 य व र्द म्म का ध लो रो वि नि र्जि ने ॥ स र्थ म्म व प ना ध म्म स र्थ म्म व प ल न प श स र्थ
 न क म्म न सि धि स र्थ न प न मी र्द न ॥ ॐ व म्म ड वा च ॥ ॐ व म्म ल वि यो ला क क र्थ

सत्यसुधं गन्तुं नमस्तुभ्यं नमः ॥ मारुभादिगमानसः ॥ भुवनासुधं नैयुधं व
मकोधयिगङ्गानि ॥ नजिवयुधपापानि, सत्यः ॥ सीरनिवालिर्गः ॥ विष्णुवाचः ॥
यश्चरुगकथंसाधुः ॥ नः ॥ वे ॥ वागविद्यागः ॥ धावधावैनमानायि, नमो ॥ ८ ॥ नैय
वगत्तुनि ॥ वध्मा ॥ उवाच ॥ नाधनकनधर्म्मनि, लारुमारुनियानिर्गः ॥ धालनैपूष
ॐ नुकि, नमः कं यवमः ॥ ॐ ॥ धवदवाच ॥ निगदं पश्चरुगानि, नित्यरुका
मभादिगः ॥ निर्जिगालारुधषाया, यमित्त्वं कृसलालिरु ॥ पययिजानकरुवै

यत्नदास्यविद्वज्जिने ॥ अथ कार्त्तव्यनिश्चयः ॥ शयान्नियममार्थकं ॥ यत्नद्वयमाह ॥ ४४ ॥
 अथ यत्नः ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥
 नमाधर्मो नास्ति किञ्चिद्गुरुयत् ॥ यत्नद्वयमाह ॥ ४५ ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥
 का ॥ ४६ ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥
 मनादिजार्त्तम ॥ ४७ ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥ च्छासां ॥
 शर्कं नरावस्थापितकृत् ॥ कनकासातिलानागम ॥ दामिहमिगदानिच ॥ ४८ ॥

20

7

5

च॥ जानाथ निवृत्तं नस्मिन्निति चैव नृगयजा॥ इन्द्रो नमसा धीं तु वृद्धं ॥
दिशि ४ सद् ४॥ नदा साक्षि लामनसा साहसं यवर्मम हृदय॥ समा नाय हनुदिश दिशा
युधममन्त्रिनी॥ नधमात्र प्रवृत्तगन नगानक प्रमदुली॥ समपथा जनन्यक सस्यशाय
निसहिता नयारि जीपृष्ठ साह्याय न॥ ५॥ नयनं दा नतु को नो यत् नो मानि न
ह न॥ ६॥ स न॥ ७॥ देवैर्युक्तं भाद्रकयु समद्वि न॥ ८॥ दी यमाना मदा वत्तै ४ कि
नी ६॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

यनिं नवमं सुखं भाग्यं वाङ्मनयनं वन्द्यं सुखं नृपिणं तद्वरं काजनांशुयशस्वतर्दवर्धनिर्वैश्वकन
 ४८ कनकधामयनाध ॥ १२ ॥ ॥ धवलवयसामेनामर्तुलसनिवर्तु रुजगवल्लयहल्लीम्पदिग्यामिमिर्ग
 ॥ रुत्रिद्ययद्युयालिं च वृच्यार्द्धभालिं रुदयकमलसंस्थसुनर्गचिकयानि कनकधामयनाध ॥ १३ ॥
 ॥ ॥ कलकलिकुल्लुमि कोमदी (गमकसामिं सुखं नलविषलिमि (गवस्वानुसमि ॥ निवसिनिहनिगमि
 (होलन्याजुर्गं सुकलइविनरुमि नोम्यर्दमुकिलिर्मि कनकधामयनाध ॥ १४ ॥ ॥ कवचवदकृगमा
 कर्मवाक्कायजिह्वा शुभ वनयनजम्बामानमं वायनाधं ॥ विहिरगसदिलिगम्बा सर्वभगवत्सम्बा ॥ १५ ॥

[illegible]

शिवसिद्ध

१॥ कूटधवनाय जगन्नाथनाथ दालिद इष्टवदनाय नमः शिवाय ॥ १ ॥ गोविधिया यनिनि वाज कवाध
नाथ कालानक कायत्तु जगन्नाथ विर्य के कनाथ नागभधलाय गज नाज विमर्द नाथ दालिद इष्टवदनाय नमः
मः शिवाय ॥ २ ॥ रुक्मिणीयाय रुक्मिणी गुरुया य रुक्मिणी दियाय दिव्यवसनाय गुप्ता लुवाय नागभधलाय
निरविलागम सीत्की गाय दालिद इष्टवदनाय नमः शिवाय ॥ ३ ॥ चर्माम्ब नाथ शवर रुक्मि विलय नाथ
राक्षस यमनि कू लुलम विगु गाय नमः शिवाय दयार्थ ग नाज वृष धजाय दालिद इष्टवदनाय नमः शिवाय
वाय ॥ ४ ॥ अयश्च न नाथ रुक्मि नाज विर्य मन्नाय स्वर्माय वर्मरु लदाय विरु मिदाय नमः शिवाय काच लुक्

नयवन्दि गाय दालिद इष्टवदनाय नमः शिवाय ॥ ५ ॥ रात्रिययाय रुक्मि नागभधलाय नाथ क
नकाय कसलायिय यजि गाय नमः शिवाय यष्टु रुक्मि नागभधलाय दालिद इष्टवदनाय नमः शिवाय
शिवाय ॥ ६ ॥ **वामनाय तयूनाधव नयुदाय** नाटयियाय नवरुक्मि यनाक काय नयुष्टाय यष्टव विगाय
सुवर्णिनाय दालिद इष्टवदनाय नमः शिवाय ॥ ७ ॥ मृकाय यष्टु लदाय गलध्वनाय गीगयियाय वृष
रुक्मि नागभधलाय नमः शिवाय चर्मवसनाय मरुध्वनाय दालिद इष्टवदनाय नमः शिवाय ॥ ८ ॥ वसिष्ठ नकु
नीलाय सर्वनागानि कृकन नमः शिवाय सर्वकर्मयुद्ध नमः शिवाय रुक्मि नागभधलाय नमः शिवाय ॥ ९ ॥ गमरु ल्याय नायाय ४६

सैमालयनैयलस्येयनश्यायिगसैनमस्तु॥८॥ श्रियासागर्करुद्युनिमिग्रका रुधनक्षचतुर्वा
 दलस्यामलांग्मात्सकलणद्वयनामूनाभाविनायलेलाश्रुगुरुस्मायदिष्टानमस्तु॥९॥ गविर्न
 कलणसूनीर्वधुवर्गैकयस्यधनसकाहृद्यैरुर्वचसमस्तैयत्रिष्टयद्राकष्टमकागमिष्यामिद
 श्वनइवीकिबर्द॥१०॥ जवर्ययिसाचिचहाजिवगभिन्नामस्तुवर्कदिर्मासवर्वचनश्रुदाद
 वसीद्यमिदिनान्कमिन्किमद्यायिर्दंगभायादाजितवी॥११॥ करुयादगाप्रात्तनश्चसव
 गयथाविष्कनसर्वमस्मास्तिर्वशीत्तविविष्याहमस्तुमस्तयामवस्माविसमिष्टाकिंका

मियसिदा॥१२॥ लयनचगानैदल्लविन्दविंष्टामवाचरुवनाथनामायलानि॥ यथावस्तु
 नैष्यामिरुक्तारुर्वीर्यगथभदयाणीलदव्यसीद॥१३॥ कृयालाहवकशवासवहमाजगन्ना
 थनामायलानदविष्टानमस्तुस्तुमिष्टालयनर्गमहात्मागुर्वीयनखलदाहाजरुक्ता॥१४॥
 नमस्तुनमस्तुजगन्नाथविष्णुनमस्तुनमस्तुगदाचक्रपाहनामस्तुनमस्तुययचारिहानिन्ध
 समस्तायनार्धकसस्त्रविष्टा॥१५॥ मुखमैददासीनखचन्द्रमाणीकुचचावूचकंसुवर्गभरिर्वर्मताह
 रुजैगजयानैरुजर्वगनार्थद्ववनादर्वनमन्यनमस्तु॥१६॥ सरीगयानैय० दसुर्गुसताया

४१५

यच्चिरुर्वर्गमनालः समाहविहयासुयुष्मत्यसाहसमानित्ययागंयजत्युनस्य॥१॥
 कृनावाथ विवविर्गमनालः समाहविहयासुयुष्मत्यसाहसमानित्ययागंयजत्युनस्य॥१॥
 शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः
 यामासयाधिव॥ वचनं विवविर्गमनालः समाहविहयासुयुष्मत्यसाहसमानित्ययागंयजत्युनस्य॥१॥
 शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः
 वात्कीरुनादवा सव्याधियुक्त्यन॥१॥ गीवीमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः शृङ्गनमः
 यथासन्नसुवामूर्ध्नि लालाहिमहिषासना॥२॥ जेदीदविगजासुवामूर्ध्नि लालाहिमहिषासना॥२॥

सना ॥ माह ॥ ध्वनी ॥
रुनरुधुधिगा ॥ व ॥ य ॥
रुका नां सरायं क ॥ रं ॥
डी ॥ अग्रयां भवे वा ॥
वृनी नरु ॥ वायूयां मृ ॥
व ॥ अलिभनरु ॥ दध ॥
व ॥ अलिभनरु ॥ दध ॥
व ॥ अलिभनरु ॥ दध ॥

५२

जयाम्बरगगन ४ स्मृतु, विजयास्मृतुयुष्टु नम्र जिगावामया ॥ १० ॥ दक्षिणवायना
जिगा ॥ ११ ॥ गिषामेशानिनिलक इमाम्भौ द्विववस्तिगानमानाधनीललाठु रु वा
नदाग्रशस्त्रिनी ॥ १० ॥ गिनगाचरु वीमध्य ना ॥ ११ ॥ द्ययनयठिक ॥ १२ ॥ रिवनीमयाम्भ
॥ १३ ॥ गथाघालवासिनी ॥ १४ ॥ कथापीकालिकानक, लेर्धूमनगुवृम्बनीनासि
कायसूगभाचउर्ध्वपृष्ठवटयक्षिनी ॥ १५ ॥ अध्वनामनायक, जिह्वायाचयनस्वगि
नदकानकंठ कीमानी, कलुषनक्षत्रचर्तुका ॥ १६ ॥ यष्टिकाविणयध्वच, महाम

वगावृकं नकामृकाविवृकंलक, दावनंसर्वमङ्गला ॥ १७ ॥ गीवायारुदकान
नयवृवंधधनृद्धनीनीवगी वावाङ्गकं ॥ १८ ॥ ललीगानवकुवना ॥ १९ ॥ संध्या ४ स्व
नरुसाच, वाक्काणवजध्विनी ॥ २० ॥ रुसुयार्द्धपुरुसाच, त्वंगुल्यामन्त्रिकानथ ॥ २१ ॥
॥ २२ ॥ नरवासूलध्वनीनक, त्वक्षोनाथध्वनीनथ, सुनीनदमहादिवि, मनसि ॥ २३ ॥
काम्भयिनी ॥ २४ ॥ द्वादयललिनादवी, उदल्लुक्कवासिनी ॥ २५ ॥ नारिकामन्त्रिकान
का, गुर्गुगुध्वनीनथ ॥ २६ ॥ द्वादयार्द्धवमनं, त्वक्षोरुगवनिनथ ॥ २७ ॥

उद्यमादावलायाका जानुम (अविनायका ॥ १० ॥ गुल्फुयानोनसिहीव याद
पृष्ठ मूज सा ४ या फुडु नी ध्वनी नय्य स्यादा धसुलतवोसिली ॥ ११ ॥ दसुं क
लाली नरवा नय्य लें ४ म मूद नि क ४ नी न म क या नि को व नी लें व व म ४
नी शु रा ॥ १२ ॥ न क म ऊ व साम (अ) वं स्मि म (अ) रु या व नी १ ४ नि काल
ला शिव पि र्क ४ मू क ४ नी ॥ १२ ॥ य दा व नि य द्र का (अ) क रु वू ठ म नि म
अ न का लामू री न र वा दाल लें वु द्या सर्व स चीष ॥ १३ ॥ गु व व द्या नि म ल क

अया क ४ ध्वनी ग थ न म ना रु काल वृद्धि म न क म ध म ध नि नि ॥ १४ ॥ या (अ) य
न य मान थ द्यु दाना वा न व व च न वा (अ) धि नी न क म सर्व या (अ) क ल्य सु स रु ही
॥ १५ ॥ न स न र्थ ग थ ग न्ध ग र्द श (अ) व द्या नि नी आय न क रु वा ना ही ध म न
क रु वी ॥ १६ ॥ वृ न क रु ल ल द्यी रा यो न क रु र न वी चि र्क न क रु व द्या
नी आय ४ कि र्क व न ज स ॥ १७ ॥ य थ ४ य न्ना नि म न क न ऊ र सर्व स मि ना ४ स र्व
न ज स म थ व न क ना ना य ही ग थ ॥ १८ ॥ न द्या दि न ज य स न वं वं न क व व न रु ४

निर
नत्सर्वनक्षत्राददी जयक्रियायनासिद्धि॥२९॥ नक्षत्रमसर्वगणनी दुर्लभदुर्लभय
हानिनी हुं हं कवचं दिव्यं त्रिसंध्य ४ यत्थ त्वेन॥ ३०॥ सर्वयार्थवित्तमर्कं गण
नामयनाजिना ४ सर्वजित्वा शुलक्षीवान् दानिष्टानि यूनानां ॥ ३१॥ यत्थ दं कव
चं कृत्वा संयमय विमलन ४ स सर्वदानि यूनानां निजिस्थसु गृहं वज्रं ॥ ३२॥
महं नक्षत्रं कवचं सफसल्या सुसारुनेन आदौ कवचं कृत्वा यत्थ त्वय सगं
जयं ॥ ३३॥ ससिद्धि राजना निर्यं जेला क्वाडु न विक्रमं न रुवा नाम च गरी नाद

द्वाम्च निवधनात् ॥ ३४॥ वागमर्कमचम वागम त्वनार्थिनरुत धनं विद्या यो न
न विद्या मराचालरुत सिद्धि ॥ ३५॥ अयुमानरुत ययुर्गं सगर्त यमुकी र्त्तनं
हुं पिमं लरुत कामं रुव सुयनि तल्ल रु ॥ ३६॥ सर्वयार्थ ४ यमचर्क सयज न्न कृ
नेत्रयि ॥ हुं निगि वा युयुना ४ सफसल्या महादेवा कवचं समार्कं ॥ ॥ ॥ ॥
शुभं सीमन्त १४९ आश्विन मास कृष्ण पक्ष नडा मी तिथि अश्विन नक्षत्र शुक्र मङ्ग
ग शुक्र वास यथानिदिन कृष्ण सिद्धि १५ लिखि निरुवा निर्णखल शुभ मसु सवदा ॥

